प्रातःक्लास 21-3-68 ओमशान्ति पितश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बाप समझाते हैं मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूं। तुम बच्चों को यह नालेज अच्छी तरह सेमिली है हम आत्माएं मूलवतन के रहने वाले हैं। उनको ही शान्तिधाम कहा जाता है। यहां आकर पार्ट बजाया है। अभी बाप कहते हैं पवित्र बनो वापस जाना है। लिखा भी है कमल फूल समान पवित्र बनना है। उनका अर्थ भी बताया। फिर भी बाप कहते हैं मामेकं याद करो। बच्चों को ही कहते हैं। बच्चे समझते हैं बाबा इसमें आकर हमको समझाते हैं। बच्चों को कहते हैं यह जो भी सारी दुनिया है यह सभी हैं हो गृहस्थ व्यवहार की। सभी को पार्ट जाना है। अभी बाप कहते हैं पवित्र बनो। अपवित्र बनने की दरकार ही क्या है। जब कि बाप कहते कमल फूल समान पवित्र बनो। गृहस्थ व्यवहार वालों को ही कहते हैं, बाकी कुमार-कुमारियां तो पवित्र ही रहती है। परन्तु बाप कहते हैं तुम जन्म-जन्मान्तर के पतित हो। मनुष्य सिर्फ इस जन्म के हिस्ट्री को जानते हैं। बताते हैं क्योंकि अन्दर में खाता है हमने यह पाप किये हैं। हम बहुत पापात्मा हैं। बाप कहते हैं सभी मनुष्य मात्र महानपापात्मा हैं। इतने जन्म पापात्मा होकर रहे हो। तुम बच्चों को तो खास कहते हैं। शुरू से लेकर सब से माया का पसारा होता है तब से तुमने पाप शुरू किये हैं। जन्म-जन्मान्तर के पाप हैं। सतोप्रधान से तमोप्रधान बन गये हो। यह है ही पापात्माओं की दुनिया। वह है पुण्यात्माओं की दुनिया। यह बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। कृष्ण भगवानुवाच तो लगता ही नहीं। वह न भगवान है न बाप है फिर मानेंगे ही क्यों। बहुत हैं जो मानते नहीं हैं। श्री गीता सुनाने वाले गृहस्थी पुरुष बहुत हैं। माता भी हैं जो बैठ गीता पढ़ती है। वास्तव में भारत की है ही गीता। यह गीता शास्त्र आद सभी भक्ति-मार्ग में पढ़ते हैं। बाप ने समझाया है यह शास्त्र पढ़ना भक्ति मार्ग है। पढ़ते तो सभी हैं ना। यह भी अक्षर पढ़ते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र रहो। और देह के सभी सम्बन्धों को छोड़ो। यह भी पढ़ता था परन्तु समझता कुछ भी नहीं था। इसलिए कहा ही जाता है पत्थर बुधि। पारस बुधि और पत्थर बुधि में फर्क तो है ना। सतयुग में होते हैं पारस बुधि। सत के संग से तुम पारस बुधि बनते हो। अभी तुम सत्य अर्थात बाप के संग में बैठे हो। नई दुनिया स्थापन होती है। बीज जब बोया जाता है तो पहले एक से शुरू होता है। प्रजापिता ब्रहमा एक है। फिर हैं एडाप्ट ब्राहमण कुल। मुखवंशावली। गायन भी है ब्रहमा मुख वंशावली ब्राहमण। प्रजापिता ब्रहमा के मुखवंशावली। बाकी वह सभी हैं कुखवंशावली। वहां ब्रहमा तो है नहीं। भल अपन को ब्राहमण कहलाते हैं परन्तु वह ब्राहमण कुल कहां से पैदा हुआ जो ब्राहमण कहलाते हैं। वह तो किसी मनुष्य का नाम कहेंगे। जैसे जैनी कुल फलाना कुल कहा जाता है ना। तो वह कोई सच्चे ब्राहमण कुल नहीं ठहरे। इस समय तुम प्रजापिता ब्रहमा के एडाप्टशन किये हुये ब्राहमण। मुखवंशावली। इनका अर्थ भी कोई समझते नहीं हैं। तुम किसको एडाप्ट करते हो तो वह तुम्हारा बच्चा थोड़े ही है फिर नाम बदलते हैं। तुम भी हो मुखवंशावली। तुम समझ मिले है अ बराबर हम प्रजापिता अ ब्रहमा के मुखवंशावली हैं। ब्रहमा को मुखवंशावला नहीं कहेंगे। ब्रहमा को फिर रथ कहा जाता है। भागीरथ। भागीरथ कैसे होता है क्या होता है किसको पता नहीं। अनेक प्रकार के बैल आद चित्र बनाते हैं। कितना श्रृंगारते हैं। जैसे वह घोड़े की सवारी दिखाते हैं। यह फिर बैल की सवारी दिखाते हैं। बैल भी कैसे2 बनाते हैं। जिसको जो आता है करते रहते हैं। अभी यह तो बच्चे जानते हैं कलियुग पुरानी दुनिया का विनाश होना ही है। मनुष्यों की बुधि में है कि जब कलियुग की आयु पूरी होगी तो विनाश होगा। वह तो लाखों वर्ष कह देते हैं। तुम तो जानते हो अभी यह पुरानी दुनिया का अन्त है। स्कूल में फ्रेंच प्लैन में फिर वह लोग दो गोले दिखाते हैं। युरोप एशिया का अलग2 दिखाते हैं। अभी तुम समझते हो सृष्टि का गोला एक ही है। सारी धरती समुद्र पर खड़ी है। फिर कोई कहते पानी में बैल है उनके सिंग पर सृष्टि खड़ी है। बैल ऐसे2 करते हैं तो अर्थक्वेक आद होती है। क्या2 बातें लिख लिख दी हैं। कहेंगे पुराने शास्त्र में यह लिखा हुआ है। पुराने में यह है। बाप तो कोई भी शास्त्रों पर रफर नहीं करते हैं। बाप तो कहते हैं यह भक्ति मार्ग का भूसा बुधि से निकालो। यह भक्ति-

धर्म के शास्त्र हैं। उनका अभी नाम भी न लो। सुना नहीं। हियर नो ए ईविल.. तुम समझते हो यह विद्या दुर्गति के शास्त्र हैं। इसलिए इनका नाम भी न लो। ऐसा कहने से भी इस पर बिगरते हैं। कोई ठीक रीति समझ जाते हैं कोई नहीं समझते। जिनको समझने का होगा वही समझेगा। ढेर के ढेर मनुष्य हैं। तुम बड़ों2 नामी-ग्रामी से ओपनींग आद कराते हो कि कुछ समझे। परन्तु वह कब समझेंगे नहीं। क्योंकि उन्हों की तो अभी राजधानी है ना। अपने सावरन्टी पिछाड़ी ही बहुत लगे हुये हैं। उन्हों को बुधि में यह ठहर न सके। इसमें तो सभी कुछ भूलना होता है। फिर भी हो सकता है कोई निकल पड़े। जिनको बाप का परिचय मिले। और समझ जाये कि अभी तो बाप को ही याद करना है। समझते हैं फिर भी कह देते हैं फुर्सत नहीं। तो समझा जाता है मुश्किल ठहर सकेंगे। दिनप्रति दिन कितना हंगमा बढ़ता जाता है। पाकिस्तान की लड़ाई, चीन की लड़ाई लगती तो फिर बुधि उस तरफ ही चली जाती है। तुमको तो पता है यह सभी छोटे2 लड़ाईयां हैं। जब विनाश होना है तो बहुत बड़ी लड़ाईयां लगेंगी। फिर यह राजधानी स्थापन हो जावेगी। इन बच्चों (ल०ना०) की भी डिनायस्टी थी ना। तो इसमें भी लिखना चाहिए सूर्यवंशी डिनायस्टी अथवा घराणा। इसमें डिनायस्टी अक्षर न है यह भी भूल है। देवताओं का घराणा था। सिर्फ एक ही नाम देने से दूसरों का पाता नहीं लगता है। इसलिए डिनायस्टी जरूर लिखना चाहिए। तुम घराणा स्थापन कर रहे हो। बाला बनती है ना। अभी बच्चे एक चित्र ले आये हैं जिसमें दिखाया है राजाओं का ताज कैसे छीना जाता है। अभी इसमें तुम सिर्फ राजाओं को दिखाया है। प्रवृति-मार्ग कैसे समझा जाये। परस राजा की निकल जाती है तो रानी की भी निकल जाती है। इसलिए युगल दिखाना पड़े। ताज भी दोनो का गिरता है। सिर्फ राजाओं को थोड़े ही गिरता है। इसलिए महारानी को भी दिखाना चाहिए। क्योंकि कब कोई भेल को समझ में आ जाता है तो उठ पड़ते हैं कब फिमेल उठ पड़ती है। तो क्यों नहीं दोनो ही का चित्र हो। दोनो ही जो डबल सिरताज थे वह ही नीचे उतरे हैं। यह चित्र आद सभी हैं ही मनुष्यों को समझाने लिए। जैसे छोटे बच्चे को सिखाया जाता है तो किताब में चि दिखाते हैं ना। उनको किताब याद आवेगा। फलाने किताब में हाथी था। उन में यह था। अभी तुम जानते हो यह हमारा देवताओं का घराणा फिर से स्थापन होता है। तो देवी का नाम लेना होता है। तो माताएं भी खुश होंगी। रानियों का भी इकट्ठा चित्र होना है। डिनायस्टी अक्षर भी लिखना पड़े। यह भी तुम बताते हो आठ जन्म राजा-रानी का। तो ऐसे2 बच्चों का खयालात चलना चाहिए। खास कर के जो चित्र बनाने वाले हैं, अपनी बुधि से बनाते हैं ना। ऐसे भी नहीं यह चित्र सिर्फ पढ़ने से समझ जावेंगे। भल तुम सारी गली में यह चित्र लगा दो। परन्तु जब तुम समझाओ नहीं तब तक कुछ भी नहीं समझेंगे। यह समझेंगे हो ब्राह्मण बच्चे। जिनको सृष्टि के आदि मध्य अन्त का नालेज है। भल कर के पढ़ते हैं पवित्र बनो योगी बनो,। सन्यासी किसको कहे भी परन्तु ऐसे नहीं कहते हमेशाके लिए पवित्र बनो। ऐसे भी किसको कह न सके कि घर-बार छोड़ो। जिनको घर-बार से वैराग्य होता है वह जंगल में चले जाते हैं। तुम तो इस सारी दुनिया से वैराग्य दिलाते हो। इस दुनिया में अभी रहना ही नहीं है। यह छी2 दुनिया है। नया घर और पुराना घर भी समझाया जाता है। उनका है हद का वैराग्य तुम्हारा है बेहद का वैराग्य। बाप को तो है ही प्रवृति मार्ग। कितना बच्चे वाला बाप है। वह निराकार यह साकार। ब्रह्मा को तो जरूर सभी सम्भाल रखनी पड़े। बहुत बच्चेवाल ठहरे तो उनको क्या गृहस्थी कहेंगे? नहीं। गृहस्थी कहा जाता है उनको जो विकार में जाते हैं। सतयुग में तो पवित्र गृहस्थ आश्रम था। बाप ने पवित्र गृहस्थ धर्म रचा। फिर रावण राज्य में अपवित्र हुये हैं। फिर बाद में जो धर्म आते हैं। अपने समय पर वह वृधि को पाते रहते हैं। यह वैराईटी धर्मों का झाड़ है ना। यह भी तुम समझते हो मनुष्य तो बिलकुल ही पत्थर बुधि हैं। जनावर के आगे रत्न क्या रखेंगे। पत्थर बुधि आसुरी बुधि कुछ भी नहीं समझते। तुम म्युजियम में कितना समझाते हो। कोई तो ऐसे ही चक्र लगा कर जाते हैं। कुछ भी समझ न सके। गीता पढ़े हुये होंगे

तो बुधि में कुछ बैठेगा। कहेंगे बरोबर यह तो गीता में भी है। देह सहित देह के सभीसम्बन्धों को छोड़ मामेकं याद करो तो विकर्मविनाश हो। यह गीता का ही अक्षर है। इसलिए बाप कहते हैं गीता पढ़ने वाले को टच हो सकता है। यह अक्षर याद आवेगा। बेहद का बाप कहते हैं देह के सर्व धर्म को त्याग अपन को आत्मा समझ मामेकं याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। यह तो बिलकुल स्ट्रेट बात है। तमोप्रधान से जब सतोप्रधान बने तब ही वापस जा सके। यह मुख्य बात है घड़ी2 याद आनाचाहिए। सतोप्रधान पावन बनने बिगर वापस शान्तिधाम जा नहीं सकते। यह भी समझेंगे कौन, जो दुःखी गरीब होंगे। साहूकारों की बुधि में नहीं बैठेगा। यहां कब बड़े आदमी को देखा है? उठावेंगे हो गरीब। क्योंकि वह दुःखी हैं। गरीब को ही विश्व का मालिक बनने लिए रास्ता बतावेंगे। तो खुश हो जावेंगे। बड़े मर्तबे वाले को यहां आकर बैठने में भी लज्जा आती है। बड़े2 मिनिस्टर्स आद की बुधि में नहीं बैठेगा। प्रामिस भी देते हैं हम फ्लाने टाईम माऊन्ट आबू में आकर समझेंगे। फिर आते ही नहीं। भाग्य में न है तो माया प्रोमिस भी भूला देती है। क्यों आकर तुम्हारा टाईम वेस्ट करे। माया वह करने नहीं देती। ड्रामा में ही नूंध ही ऐसा है।

तुमको पूछना चाहिए कब गीता पढ़ी है। तुम किसकी पूजा करते हो। बाबा ने कह दिया है देवताओं के पुजारी हो, गीता पढ़ने वाला हो, उनको समझाओ। भक्ति-मार्ग में कितना गायन पूजन चलता है। मिलता कुछ भी नहीं है। त्योहार आद सभी इस समय के हैं जिनका गायन चला आता है। अर्थ कुछ भी नहीं समझते। कोई भी पावन नहीं बनते। खड़ी का अर्थ भी समझ नहीं सकते हैं। तुम भी ब्राह्मण हो। वह है जिसमानी ब्राह्मण तुम हो रूहानी। तुम भी दान लेते हो। ब्राह्मण बन फिर ब्राह्मण से देवता बन जावेंगे। ब्राह्मण हैं प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे। ब्राह्मण चोटी कहा जाता है। प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणों ने ही ज्ञान लिया देवता बनने लिए। विराट रूप भी है ना। प्रजापिता ब्रह्मा भी अभी है। वह लोग मानते भी ब्रह्मा को हैं। परन्तु वह कब आए यह कुछ भी पता नहीं। अभी तुमको सब नालेज है। नब्ज़ देख समझाना होता है। बिच्छू होता है ना नरम चीज़ देख काटता है। तुमको भी समझाने की भिन्न2 युक्तियां मिलती है। पात्र देख कर दो तो तुम्हारा टाईम वेस्ट न होगा। कुपात्र को दे व्यर्थ न गवाना चाहिए। नब्ज़ देखने की भी युक्ति चाहिए। दिन प्रति दिन तुम्हारी मेहनत कम हो ती जावेगी। तुम समझ जावेंगे कौन उठाये सकेंगे वा नहीं। देह से तुमको पड़े जाना है। अशरीरी बनना है। अशरीरी होकर तुमकोकिसको भीसमझावेंगे तो वह अशरीरी शान्त हो जावेगा। शान्ति तो सभी मांगते हैं। बोलो अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। हम आत्मा हैं ही शान्त-देश के वासी। हम शरीर से अलग हो जाते हैं। तो शान्ति ही शान्ति ही है। तुम जानते हो हम शरीर से अलग हो जाने वाले हैं। अपन को आत्मा समझ बाप कोयाद करोतो आटोमेटकली तुम कर्मातीत अवस्था में जावेंगे। तुम यहां आये ही पार्ट बजाने। सब से जास्ती तुम ने पार्ट बजाया है। इसलिए तुम ही तमोप्रधान बने हो। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। भक्ति-मार्ग में कब सतोप्रधान बनने लिए बतावेंगे ही नहीं। जो स्वयं सतोप्रधान हैं वही रास्ता बताते हैं। यहां तो सभी तमोप्रधान हैं। वह क्या रास्ताबतावेंगे। सतोप्रधान तो एक ही बाप है वह कहते हैंअपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। पहले2 आत्मा प्युर ही आती है। ऊपरसे जो नई आत्मायें आती हैं, प्युर होने कारण उन्हों का मान-मर्तबा होता है। उन में ताकत होती है। फिर दिन प्रति दिन ताकत कम हो जाती है। यह ड्रामा बना हुआ है। उनको भी अच्छी रीत समझना है। तुमको बिचार सागर मथन करने की आदत पड़ती रहेगी। तो पाईन्ट बहुत आते रहेंगे। सिर्फ वाणी पर भी आधार न रखो। बिचार सागर मथन तो तुमको करना है बाप को नहीं। यह बाबा भी बिचार सागर मथन करता है ना। तुम भी पाईन्ट निकाल सकते हो। यह है टावर आफ सायलेन्स। टावर आफ प्युरिटी। आगे चल कर यहां कोई अपवित्रआये न सकेंगे। ग्यान भी है ना इन्द्र सभा का। वह समय आवेगा पतित को बैठने न देंगे। कहां पतित बगुला-कहां

पावन हंस। इस सभा में पतित को आने अलो नहीं करेंगे। बाप का आर्डीनेन्स है ना पवित्र बनो। जो पवित्र बनते हैं वही विश्व का मालिक बनते हैं। पवित्र नहीं बनते हैं तो तो विनाश को पाते हैं। यह है ईश्वरीय आर्डीनेन्स। जो मानेगा उनको ही वर्षा मिलेगा। बाप कहते हैं कोई भी पतित न बने। फिर भी पतित बनते हैं तो आर्डीनेन्स का उल्लंघन करते हैं। पत्थर बुधि मनुष्य हैं ना। यह सारी दुनिया ही जंगल है। शास्त्रों फिर लिख दिया है सराप दिया तो पत्थर बन गया। पत्थर बुधि तो सभी बने हैं ना। श्रीमत पर नहीं चलते हैं तो जैसे जंगली झाड़ हैं। वह जंगली कांटे बन जावेंगे। फूल बन न सकेंगे। बाप ने जो बातें समझाई है वह फिर भक्ति-मार्ग में उलट-पुलट कर देते हैं। जंगली भी बनना ही है। बाप को आना ही है। अभी तुम फूल बन रहे हो। सतयुग में यह नालेज थोड़े ही रहेंगे। कुछ भी नहीं। यह ज्ञान ही प्रायः लोप हो जाता है।

अभी तुम्हारी आत्मा में ज्ञान है। आत्मा कितनी छोटी है उनमें 84 जन्मों का पार्ट है। यह और कोई मनुष्य को पता नहीं है। आत्मा को भी जानना चाहिए ना। दोनों आत्मा का दर्शन किया है। अपना दर्शन नहीं किया है तो बाप का फिर कैसे होगा। आत्मा भी गुप्त है, परमात्मा भी गुप्त है। भक्ति-मार्ग में भल दीदार होता है परन्तु समझते कुछ भी नहीं। सन्यासियों से क्या मिलेगा। वह तो घर-बार ही छोड़ेंगे। उनका है ही हठयोग। फिलॉसफर्स तो हठयोग कर न सके। आजकल तो बहुत सन्यासी कपड़ा पहन लेते हैं। परन्तु फिर भी पैदा तो विकार से ही होते हैं ना। ऐसे बहुत हैं जो सारी आयु भी पवित्र रहते हैं। विलायत में भी ऐसे बहुत पवित्र रहते हैं। फिर जब बूढ़े होते हैं तो सम्भाल के लिए कम्पेनियन बना लेते हैं। फिर मिकीयत कुछ चैरिटी में कुछ सम्भालने वाली को देकर जाते हैं। वह भी सन्यासी ठहरे ना। शहर में रहते सभी कुछ करते हैं। किसम2 के मठ-पंथ हैं। यह बाप बैठ समझाते हैं। रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को भी तुम जानते हो। यह हार-जीत का खेल कैसे है, झाड़ की वृधि कैसे होती है यह तुम्हारे बुधि में है। इसे लाभी वोर्धा भी पीछे आते हैं। पहले2 है डिटी डिनायस्टी। अच्छा इस्लामी आया। उनको 2500 वर्ष हुये। उनसे पहले बाकी सूर्यवंशी चन्द्रवंशी रहे। आधा में वह। कहते हैं ना आधा में जाम आधा में रईयत। वह तो फिर भी विश्व के मालिक बनते हैं ना। वह है पवित्र डिनायस्टी। वह अपवित्र। तुमको सारा राज़ समझाया जाता है यह दुनिया का चक्र कैसे फिरता है। बाप ने आगे भी कल्प वृक्ष की नालेज दी थी। अभी भी दे रहे हैं। कल्प2 देते रहेंगे। हार-जीत भी तुम्हारी होती है। तुम ही पहले2 आते हो तुमको ही नई दुनिया का मालिक बनता हूं। इसलिए पुरुषोत्तम युग का किसको भी पता नहीं है। बिलकुल ही घोर-अंधियारा है। भक्ति है ही घोर-अंधियारा। ज्ञान सूर्य पंकटा अज्ञान अंधेर विनाश। आधा कल्प है अंधियारा आधा कल्प है सोदारा। बाप प्रैक्टीकल में सिध कर बतलाते हैं। फिर वह कहानी बन जाती है। यह ही सत्यनारायण की कथा है। अमर कथा, तीजरी की कथा है। साधू सन्त आदि शास्त्र पढ़ने वाले अर्थ बता न सके। अमर कथा अभी तुम बच्चों को बाप सुना रहे हैं। वह है अमरकथा। यह है मृत्युलोक। कितनी बातें समझाई जाती है। इसमें भी बड़ी बुधि चाहिए। अच्छा आत भोग है।

यह भोग आदि की बातें बिलकुल अलग हैं। यह भी एक रसम रिवाज है। इन में कुछ रखा न है। तुमको तो बाप समझाते हैं यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागरफी कैसे रिपीट होती है। पहले2 डिटी डिनासटी थी वह आधा कल्प चलो। फिर झाड़ में एड होते गये। मनुष्य सृष्टि के झाड़ की आयु भी बड़ी होनी चाहिए। आयु है ही 5000 वर्ष। लाखों वर्ष तो हो न सके। झाड़ इतना बड़ा थोड़े ही हो सकता है। लाखों वर्ष में कितना बड़ा झाड़ हो जाये। इनकी भेट बड़ी वड़ के झाड़ से की जाती है। उनका भी फाउन्डेशन नहीं है। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। यह भी ऐसे हैं। थुर है नहीं। बाकी कितने डास्टारियां आदि हैं। कोई बड़े, कोई छोटे वन्डर है ना। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

-: : ओमशान्ति : :-